जीएम फसलों के विरुद्ध बुलंद हुए वैज्ञानिक

भारत डोगरा

आज जब जीएम फसलों व उनके परीक्षणों के तेज़ प्रसार के लिए असरदार निहित स्वार्थ बहुत सक्रिय हो रहे हैं, यह रेखांकित करना बहुत ज़रूरी है कि विश्व के अनेक प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों ने बार-बार जीएम (जिनेटिक रूप से परिवर्तित) फसलों के स्वास्थ्य, पर्यावरण व खेती-किसानी की तबाही सम्बंधी खतरों के बारे में चेतावनी दी है। उन्होंने यह केवल अपनी व्यक्तिगत राय के रूप में ही नहीं किया है, अपितु इस विषय के महत्त्व को देखते हुए विशेष समूहों का गठन कर इस विषय पर अपनी सामूहिक चेतावनी भी दी है।

इंडिपेंडेट साइंस पैनल (स्वतंत्र विज्ञान मंच) में एकत्र हुए विश्व के अनेक देशों के प्रतिष्ठित वैज्ञानिकों व विशेषज्ञों ने जी.एम. फसलों पर एक महत्त्वपूर्ण दस्तावेज़ तैयार किया है जिसके निष्कर्ष में उन्होंने कहा है - जी.एम. फसलों के बारे में जिन लाभों का वादा किया गया था, वे प्राप्त नहीं हुए हैं और ये फसलें खेतों में बढ़ती समस्याएं पैदा कर रहीं हैं। अब इस बारे में व्यापक सहमति है कि इन फसलों का प्रसार होने पर ट्रान्सजेनिक प्रदूषण से बचा नहीं जा सकता है। अतः जी.एम. फसलों व गैर-जी.एम. फसलों का सह अस्तित्व नहीं हो सकता है। सबसे महत्त्वपूर्ण यह है कि जी.एम. फसलों की सुरक्षा प्रमाणित नहीं हो सकी है। इसके विपरीत पर्याप्त प्रमाण प्राप्त हो चुके हैं जिनसे इन फसलों की सुरक्षा सम्बंधी गंभीर चिंताएं उत्पन्न होती हैं। यदि इनकी उपेक्षा की गई तो स्वास्थ्य व पर्यावरण की क्षति होगी जिसकी पूर्ति नहीं हो सकती है। जी.एम. फसलों को अब दृढ़तापूर्वक अस्वीकार कर दिया जाना चाहिए।

यूनियन ऑफ कन्सर्न्ड साइंटिस्ट्स (सरोकारी वैज्ञानिक संघ) नामक वैज्ञानिकों के संगठन ने कुछ समय पहले अमरीका में कहा था कि जिनेटिक इंजीनियरिंग के उत्पादों पर फिलहाल रोक लगनी चाहिए क्योंकि ये असुरक्षित हैं। इनसे उपभोक्ताओं, किसानों व पर्यावरण को कई खतरे हैं। इंडिपेंडेंट साइंस पैनल के 11 देशों के वैज्ञानिकों ने जी.एम. फसलों के स्वास्थ्य सम्बंधी दुष्परिणामों की ओर ध्यान दिलाया है। जैसे प्रतिरोध क्षमता पर प्रतिकूल असर, एलर्जी, जन्मजात विकार, गर्भपात आदि।

कुछ समय पहले भारत में बीटी बैंगन के संदर्भ में इस विवाद ने ज़ोर पकड़ा तो विश्व के 17 विख्यात वैज्ञानिकों ने भारत के प्रधानमंत्री को पत्र लिखकर इस बारे में नवीनतम जानकारी उपलब्ध करवाई थी। पत्र में कहा गया है कि जी.एम. प्रक्रिया से गुज़रने वाले पौधे का जैव-रसायन बुरी तरह अस्त-व्यस्त हो जाता है जिससे उसमें नए विषैले या एलर्जी उत्पन्न करने वाले तत्त्वों का प्रवेश हो सकता है व उसके पोषक गुण कम हो सकते हैं या बदल सकते हैं। जीव-जंतुओं को जी.एम. खाद्य खिलाने पर आधारित अनेक अध्ययनों से जी.एम. खाद्य से किडनी, लिवर, पेट, रक्त कोशिकाओं, व प्रतिरोधक क्षमता पर नकारात्मक असर सामने आ चुके हैं।

17 वैज्ञानिकों के इस पत्र में आगे कहा गया है कि जिन जी.एम. फसलों को स्वीकृति मिल चुकी है उनके संदर्भ में भी अध्ययनों से ये नकारात्मक स्वास्थ्य परिणाम नज़र आए हैं। इससे पता चलता है कि कितनी अधूरी जानकारी के आधार पर स्वीकृति दे दी जाती है व आज भी दी जा रही है।

इन वैज्ञानिकों ने कहा है कि जिन जीव-जंतुओं को बीटी मक्का खिलाया गया उनमें प्रत्यक्ष विषैला प्रभाव देखा गया। बीटी मक्के पर मॉन्सेंटो के अपने अनुसंधान का जब पुनर्मूल्यांकन हुआ तो अल्पकालीन अध्ययन में भी नकारात्मक स्वास्थ्य परिणाम दिखाई दिए। बीटी बैंगन जंतुओं को फीड करने के अध्ययनों पर महिको-मॉन्सेंटो ने जो दस्तावेज़ तैयार किया था उससे विभिन्न जीव-जंतुओं, विशेषकर चूहे, खरगोश व बकरी के लिवर, किडनी, खून व पैंक्रियास पर नकारात्मक स्वास्थ्य परिणाम नज़र आते हैं। मात्र 90 दिन या उससे भी कम अवधि में ये प्रतिकूल असर नज़र आए। जीवन-भर के

अध्ययन से न जाने कितने प्रतिकूल परिणाम सामने आते।

विश्व के इन 17 विख्यात वैज्ञानिकों ने हाल ही में भारत के प्रधानमंत्री को पत्र लिखकर यह स्पष्ट बताया है कि जी.एम. फसलों से कीटनाशक/जन्तुनाशक के उपयोग में वृद्धि हुई है। उन्होंने यह भी बताया है कि जलवायु परिवर्तन के दौर में हमें कृषि में जिस लचीलेपन, मज़बूती व जैव विविधता की आवश्यकता है, जी.एम. फसलें तो उससे विपरीत दिशा में ले जाती है। अतः जलवायु परिवर्तन के दौर में जीएम फसलों को अपनाने से कठिनाइयां और बढ़ सकती हैं।

इन वैज्ञानिकों ने यह भी कहा है कि विश्व में जीएम फसलों का प्रसार बहुत सीमित रहा है व पिछले दशक में ऐसी नई फसलें बाज़ार में नहीं आ सकी हैं और किसान भी इन्हें स्वीकार करने से कतरा रहे हैं। उन्होंने अपने पत्र में कहा है कि जी.एम. तकनीक में ऐसी मूलभूत समस्याएं हैं जिनके कारण कृषि में यह सफल नहीं है। जी.एम. फसलों की उत्पादकता में स्थिरता कम है।

बीटी कपास या उसके अवशेष खाने के बाद या ऐसे खेत में चरने के बाद अनेक भेड़-बकरियों के मरने व पशुओं के बीमार होने के समाचार मिले हैं। डॉ. सागरी रामदास ने इस मामले पर विस्तृत अनुसंधान किया है। उन्होंने बताया है कि ऐसे मामले विशेषकर आंध्र प्रदेश, हरियाणा, कर्नाटक व महाराष्ट्र में सामने आए हैं। पशुपालकों ने स्पष्ट बताया है कि सामान्य कपास के खेतों में चरने पर ऐसी स्वास्थ्य समस्याएं नहीं देखी गई थी, जी.एम. फसल के आने के बाद ही ये समस्याएं देखी गईं। हरियाणा में दुधारू पशुओं को बीटी काटन बीज व खली खिलाने के बाद उनमें दूध कम होने व प्रजनन की समस्याएं सामने आईं।

'जीव विज्ञान की नई परिभाषा' पर मलेशिया में हुई एक बहुचर्चित सभा में अनेक विख्यात जीव वैज्ञानिकों, कृषि वैज्ञानिकों व पर्यावरणविदों ने एक दस्तावेज़ जारी किया था जिसमें कहा गया है कि जिनेटिक इंजीनियरिंग से उत्पन्न कुछ असफल फसलें हानिकारक खरपतवार बन सकती हैं या उनके माध्यम से ऐसे जीन जंगली पौधों में पहुंच सकते हैं जो उन्हें हानिकारक खरपतवार बना देंगे। इस तकनीक से हानिकारक कीटों की रोकथाम का दावा किया जा रहा है मगर इससे नए हानिकारक कीटों के प्रकोप व बीमारियों की संभावना भी पैदा हो रही है। किसानों की विविध फसल किस्मों व जंगली पौधों को विस्थापित कर जी.एम. फसलें जैव विविधता का ह्रास भी कर सकती हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***

अगले अंक में

स्रोत सितंबर 2011
अंक 272

- **आधार संख्या के मिथक**
- **दवा परीक्षण और मानव अधिकार**
- **दोनों टांगों का प्रत्यारोपण**
- **औज़ार बनाने वाले जानवर**
- **देसी पालक बनाम विदेशी पालक**